98

राजा आ रहा है!

प्रेरितों 1:10, 11, एक निकट दृष्टि

''राजा आ रहा है!'' विषय की गूंज पुराने और नये दोनों नियमों में सुनाई देती है। पुराने नियम में विचार था ''राजा आ रहा है!'' सुसमाचार के वृत्तांतों में, संदेश था ''राजा आ चुका है!'' शेष नये नियम का विषय है ''राजा फिर आ रहा है!''[1]

पुराना नियमः ''राजा आ रहा है!''

पूर्वाभास का जोश

पुराने नियम में, मनुष्य के पाप करने के बाद परमेश्वर ने आने वाले उद्धारकर्त्ता की एक के बाद एक प्रतिज्ञा दी। ''पुराने नियम में लोगों को बचाने के लिए आने की ... मसीह की लगभग 380 भविष्यवाणियां हैं।''[2] आरम्भिक प्रतिज्ञाएं *वंश* की प्रतिज्ञाएं थीं (उदाहरण के लिए उत्पत्ति 3:15; 22:18)। परन्तु अन्ततः परमेश्वर ने बता दिया कि इस्राएली ही वह जाति है, जिसके द्वारा उद्धारकर्त्ता ने आना था। उस जाति पर शासन करने के लिए राजा के नियुक्त होने पर की गई प्रतिज्ञाएं *राज्य* की प्रतिज्ञाएं बन गईं।

उदाहरण के लिए, भजन संहिता 2 को यहूदी लोग एक महान राजा के आने के सम्बन्ध में मानते थे।[3] आयत 2 में हम पढ़ते हैं कि ''यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा और हाकिम आपस में सम्मति'' करते हैं। इब्रानी शब्द का अनुवाद ''अभिषिक्त'' ''मसीहा'' ही है; इसका यूनानी समानान्तर शब्द ''ख्रिस्त'' है। कई आध्यात्मिक अधिकारियों का तेल से अभिषेक किया जाता था,[4] पर आम यहूदी ''अभिषिक्त'' शब्द सुनकर *राजा* का ही विचार करता था। इस्राएल के पहले राजा, राजा शाऊल को ''यहोवा का अभिषिक्त'' के रूप में जाना जाता था (1 शमूएल 24:6, 10; 26:9, 11, 16, 23)। भजन संहिता 2 में, अभिषिक्त के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने कहा था, ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ'' (आयत 7)। एक राजा आ रहा था!

फिर, दानिय्येल 2:44 में हम इस प्रतिज्ञा को पाते हैं: ''उन राजाओं के दिनों में [अर्थात, रोमी साम्राज्य में] स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा, जो अनन्तकाल तक न टूटेगा।'' इन तथा अन्य कई प्रतिज्ञाओं ने इस्राएलियों को अन्धकार के कई दिन और रात में स्थिर रखा था। राजा अपना राज्य स्थापित करने आ रहा था!

पूर्वाभास का फीका पड़ना

समय बीतने और राजा के प्रकट न होने पर, इस्राएलियों का पूर्वाभास फीका पड़ गया। लैंडन सॉन्डर्स ने मसीह के समय तक उनकी परिस्थितियों का यह विवरण दिया है:

> रोम की धूम और शक्ति हर जगह स्पष्ट थी। सैनिक टुकड़ियां उनकी गलियों में से मार्च करतीं, उनकी पहाड़ियों पर गश्त लगाते, पवित्र मन्दिर को ऊपर से देखतीं, लगातार, चिढ़ाने वाली याद दिलातीं कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश एक मूर्तिपूजक शासन के कब्ज़े में है।[5]

धीरे-धीरे उस जाति का ध्यान सांसारिक बातों की ओर हो गया, यहां तक कि उनका भी, जो धार्मिक होने का दावा करते थे। आशा की किरण कुछ मनों में धीमी पड़ चुकी थी।

परन्तु दूसरों में यह तेज़ी से चमकती रही। उदाहरण के लिए, जब यूसुफ और मरियम नवजात यीशु को मन्दिर में लाए थे, तो वहां शमौन नाम का एक बुज़ुर्ग भी था, जो वर्षों से ''इस्राएल की शांति की बाट जोह रहा था'' (लूका 2:25)। ऐसी शांति जो केवल वह राजा ही ला सकता था। बालक यीशु को गोद में लेकर उस व्यक्ति ने परमेश्वर का धन्यवाद किया था: ''हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शांति से विदा करता है, क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है'' (लूका 2:29, 30)। कई बार यह ज्वाला अनापेक्षित कोनों में जलती थी। जब यीशु ने याकूब के कुएं पर एक बदनाम सामरी स्त्री से बात की थी तो उसने कहा था, ''मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आने वाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा'' (यूहन्ना 4:25)।

सुसमाचार के वृज़ांत: ''राजा आ चुका है!''

पूर्वाभास तेज़

परन्तु फिर कुछ ऐसा हुआ कि इस्राएल की आशा की ज्वाला भड़क उठी और तेज़ी से फैलने लगी। यूहन्ना नाम का एक व्यक्ति यहूदिया के जंगल में प्रचार करने लगा: ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 3:2)। अन्य शब्दों में वह कह रहा था कि ''राजा आ रहा है-और तुम्हें तैयार हो जाना चाहिए!'' लोगों ने यूहन्ना से पूछा, ''तो हम क्या करें?'' (लूका 3:10)। उसका उत्तर था, ''जिस के पास दो कुरते हों, वह उसके साथ जिस के पास नहीं है, बांट ले और जिस के पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे'' (लूका 3:11)। उसने चुंगी लेने वालों को बताया, ''जो तुम्हारे लिए ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना'' (लूका 3:13)। सिपाहियों को उसने बताया, ''किसी पर उपद्रव न करना और न झूठा दोष लगाना और अपनी मज़दूरी पर संतोष करना'' (लूका 3:14)। आने वाले राजा के पूर्वाभास से यूहन्ना के सुनने वालों के जीवनों पर सकारात्मक असर हुआ!

वह चिर-प्रतीक्षित राजा यीशु था (मत्ती 2:2; यूहन्ना 1:49)। परन्तु जब वह आया,

तो उसका जन्म महल में नहीं हुआ, उसने शाही वस्त्र नहीं पहने और न ही उसके पास शक्तिशाली सेना थी।[6] इन बातों से कुछ लोगों को संदेह तो हुआ कि वह राजा कैसे हो सकता है, परन्तु अपने राज्य की स्थापना उसके मन और होंठों पर रहती थी। यूहन्ना की तरह ही उसने भी प्रचार किया, ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17)। उसके कई दृष्टांत ''स्वर्ग का राज्य ... के समान है'' शब्दों से आरम्भ होते थे (मत्ती 13:31, 33, 44, 45, 47, 52; 20:1)। उसने पतरस को ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' देने की प्रतिज्ञा की (मत्ती 16:19)। अपने प्रेरितों को उसने बताया कि परमेश्वर का राज्य ''सामर्थ के साथ'' उन्हीं के जीवन काल में आना था (मरकुस 9:1)।

पूर्वाभास फीका पड़ा

दुर्भाग्य से, राजा और उसके राज्य के बारे में लोगों में गलतफ़हमी थी: वे एक सांसारिक राजा की राह देख रहे थे, जो किसी राजनैतिक राज्य पर शासन करे और उनके शत्रुओं को पराजित करे। एक दिन लोगों की भीड़ ने यीशु को ऐसा ही राजा बनाने का प्रयास किया, पर उसने उन्हें इसकी अनुमति नहीं दी (यूहन्ना 6:15)। बाद में, एक रविवार के दिन, मसीह यरूशलेम में गधी पर सवार होकर आया और लोग पुकार रहे थे, ''होशाना; धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है। हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है ...!'' (मरकुस 11:9, 10)। स्पष्टतया उन्हें उम्मीद थी कि यीशु अपना राज्य स्थापित करेगा, पर उन्हें निराशा हुई।

यीशु की कुछ बातों का अर्थ लोगों ने ऐसे लिया, जैसे वह अपने आप को राजा न कह रहा हो। उसने कहा, ''मेरा राज्य इस जगत का नहीं'' (यूहन्ना 18:36क)। उसने मरने के लिए क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात की (देखें मत्ती 16:21; 17:23; 20:19), जिससे लगता था कि यह राजा होने की बात नहीं हो सकती! उसने इस संसार को *छोड़कर* जाने की बात की (देखें यूहन्ना 16:28)।

परन्तु उसने *फिर आने* की बात भी की।[7] इस प्रस्तुति के संदेश का यही सार है। मत्ती 24 और 25 में उसके विस्तृत संदेश में हमें ये शब्द मिलते हैं:

> जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही *मनुष्य के पुत्र का आना* भी होगा। क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह-शादी होती थी। और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का *आना* भी होगा (24:37-39)।
>
> इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि *तुम्हारा प्रभु* किस दिन *आएगा* (24:42)।
>
> *तब मनुष्य का पुत्र* अपनी महिमा में *आएगा,* और सब स्वर्ग दूत उसके साथ

> आएंगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। ... और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे (मत्ती 25:31-46)।

ऊपरी कमरे में यीशु के अद्वितीय विदाई संदेश में, उसने अपने प्रेरितों को बताया:

> तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, *तो फिर आकर* तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो (यूहन्ना 14:1-3)।

परन्तु, मसीह के इन शब्दों के कहने की अगली सुबह, उसे एक रोमी क्रूस पर चढ़ा दिया गया और उसके चेलों के स्वप्न और आशाएं मिट्टी में मिल गईं।

प्रेरितों के काम और पत्रियां: ''राजा फिर आ रहा है!''

पूर्वाभास तेज़

यीशु के मुर्दों में से तीसरे दिन जी उठने से उम्मीद फिर से जग गई थी। फिर वह स्वर्ग में अपनी वापसी के लिए चेलों को तैयार करते हुए, चालीस दिन तक उनके साथ रहा। अन्त में उसके जाने का समय आ गया। वह उन्हें जैतून के पहाड़ की पूर्वी ढलान पर एक जगह ले गया, जहां से अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी और स्वर्ग में उठा लिया गया। प्रेरित जब ''आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए'' (प्रेरितों 1:10)। स्वर्गदूतों ने कहा, ''हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर *आएगा* '' (प्रेरितों 1:11)। मसीह के अनुयायियों को एक नया संदेश दिया गया था: ''राजा फिर आ रहा है!''

जैसे इस्राएलियों को ''राजा आ रहा है!'' के आश्वासन से प्रोत्साहन मिलता था, वैसे ही यह विचार कि ''राजा फिर आ रहा है'' आरम्भिक मसीहियों को प्रोत्साहित करता था। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक इस विषय की ओर संकेत करते थे। एक लेखक के अनुसार, ''नये नियम की कम से कम 370 आयतें मनुष्यों का न्याय करने के लिए उसके द्वितीय आगमन के बारे में हैं। नये नियम की 7,959 आयतों में से हर पच्चीसवीं आयत मसीह की वापसी के विषय को स्पर्श करती है। यह शिक्षा नये नियम की 27 में से 23 पुस्तकों में है।''[8] इस विषय से जुड़े कुछ पद निम्न हैं। पौलुस ने लिखा है:

> पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार, जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा (फिलिप्पियों 3:20, 21)।

राजा के लौटने पर, निर्बलताओं से भी यह घिसी-पिटी देह एक नई देह में बदल जाएगी। हमें आत्मिक देहें दी जाएंगी, जो ''उसकी महिमा की देह'' से मिलती-जुलती होंगी!

थिस्सलुनीके के मसीही लोगों से पौलुस ने यह कहा था:

> क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे।[9] तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17)।

आने वाले दिनों में थिस्सलुनीके के मसीही लोगों ने कई प्रियों को विश्राम के लिए पृथ्वी में लिटाना था। पौलुस ने उन्हें चिंता न करने के लिए कहा। उसने समझाया कि धर्मी लोग राजा के लौटने पर अपना प्रतिफल नहीं खोएंगे, वे जी उठेंगे। उसने कहा, ''सो इन बातों से एक-दूसरे को शांति दिया करो'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)।

यूहन्ना ने आने वाले राजा के विषय को सुनाया: ''निदान, हे बालको, उसमें बने रहो; कि जब वह प्रकट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों'' (1 यूहन्ना 2:28)। राजा के आने पर यदि हम तैयार होंगे तो आत्मविश्वास से भरे होंगे-यदि तैयार नहीं होंगे, तो लज्जित होंगे। 1 यूहन्ना 3:2 कहता है, ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।''

और भी आयतें दी जा सकती थीं, परन्तु यह दिखाने के लिए कि मसीह का लौटना एक बीच-बीच में आते रहने वाला विषय है, यही काफ़ी हैं। आइए अब नये नियम के अन्त में चलते हैं। यहां यीशु की अन्तिम प्रतिज्ञा है: ''देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है'' (प्रकाशितवाक्य 22:12)। ''मैं शीघ्र आने वाला हूं'' शब्द कइयों को अजीब लगेंगे, क्योंकि सैकड़ों वर्ष बीत गए हैं और प्रभु अभी तक नहीं आया है।[10] बिल बेनोव्सकी ने सुझाव दिया है:

> बाइबल के अंतिम पदों में ''शीघ्र'' शब्द को पृथ्वी के जीवन के निश्चित परिप्रेक्ष्य

> से नहीं, बल्कि परमेश्वर के आयु रहित जीवन से देखना चाहिए। दो हज़ार वर्षों की हमारी गणना आई और चली गई है, पर उसके लिए एक हज़ार वर्ष केवल एक दिन ही है। परमेश्वर घड़ी नहीं पहनता है।[11]

बेनोव्सकी ने यह भी सुझाव दिया है कि यीशु के शब्द यह विचार देने के उद्देश्य से नहीं थे कि उसका आना ''तुरन्त'' होगा, बल्कि यह था कि यह ''सन्निकट'' था।[12] ''सन्निकट'' का अर्थ है कि *यह किसी भी क्षण हो सकता है।* आरम्भिक मसीही इसे सत्य मानते थे, और हमें भी इस पर विश्वास करना चाहिए। बाइबल की अन्तिम से पहली आयत में, यूहन्ना ने यीशु की प्रतिज्ञा दोहराई है: ''जो इन बातों की गवाही देता है, वह यह कहता है, 'हां, मैं शीघ्र आने वाला हूं' '' (प्रकाशितवाक्य 22:20क)। फिर प्रेरित ने कहा, ''आमीन। हे प्रभु यीशु आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:20ख)।

नये नियम के लेखक सिखाते थे कि राजा का आना सब के सामने,[13] सब को सुनाई देने, बिना किसी चेतावनी के[14] सामर्थ और महिमा के साथ होगा। वे सिखाते थे कि वह मुर्दों को जिलाने, सब लोगों का न्याय करने और प्रतिफल तथा दण्ड देने के लिए आएगा।[15] अन्याय से भरे संसार में, वे यह संदेश सुना रहे थे कि राजा सब कुछ ठीक करने के लिए आएगा!

राजा के *पहली* बार आने के पूर्वाभास से इस्राएलियों के जीवन में असर हुआ था। इसी प्रकार, *दूसरी* बार आने के पूर्वाभास से आरम्भिक मसीहियों पर असर हुआ:

- इस ने उन्हें *बदल दिया*। इस से उनके परिप्रेक्ष्य बदल गए। उन्होंने अपनी सोच के केन्द्र ''राजा फिर आ रहा है!'' के तथ्य से जीवन को अलग ढंग से देखा।
- इसने उन्हें *चुनौती दी*। द्वितीय आगमन की बात करते हुए, पतरस ने लिखा:

> परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।
> तो जब कि ये सब वस्तुएं, इसी रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए ... (2 पतरस 3:10-12)।

इसी कारण, जब यूहन्ना ने यहूदियों को बताया कि ''राजा आ रहा है!'' तो उन्होंने मन फिराया और अपने जीवन बदल लिए। पतरस ने कहा, यह सच्चाई कि ''राजा फिर आ रहा है!'' हमारे जीवनों को भी बदलने के लिए होनी चाहिए। यदि भोजन के लिए देश का राष्ट्रपति आपके घर आने वाला हो तो आप क्या करेंगे? क्या आप अपने आप से बातें करते हुए नहीं पूछेंगे, ''मैं क्या बनाऊं? क्या पहनूं? मुझे अपने घर की सजावट में क्या परिवर्तन करना चाहिए?'' पतरस ने कहा कि जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि राजा आ रहा है, तो

यह प्रश्न हमारे मन में सबसे ऊपर होना चाहिए कि ''पवित्र चाल-चलन और भक्ति में हमें कैसे लोग होना चाहिए?''

- इससे उन्हें *पुष्टि* हो गई। उन्हें इस बात से *सामर्थ* मिली कि राजा वापस आएगा। उनके जीवन में जो भी हो जाए, उन्हें पता था कि राजा आएगा और उन्हें छुड़ा लेगा। यूहन्ना की तरह वे भी प्रार्थना करते थे, ''हे प्रभु यीशु आ!'' वे एक शब्द का इस्तेमाल करते थे ''मारानाथा'' (1 कुरिन्थियों 16:22ख) जो अरामी शब्द है और उसका मूल अर्थ है ''आ, हे प्रभु!'' यह विश्वास की एक अभिव्यक्ति थी कि वह आएगा और यह प्रार्थना थी कि वह जल्दी आए। पतरस के शब्दों का इस्तेमाल करें, तो वे ''परमेश्वर के उस दिन की बाट'' जोह रहे थे कि वह जल्दी आ जाए (2 पतरस 3:12)। मैसीलोन के अनुसार, ''प्रभु के आने के लिए आह न भरना विश्वास के त्याग की एक किस्म होना था।''[16]
- इससे उन्हें *सांत्वना मिलती थी*। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को यह आश्वासन देते हुए कि राजा सचमुच वापस आ रहा है, लिखा, ''सो इन बातों से एक-दूसरे को शांति दिया करो'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)। बेशक वे अपने विश्वास के लिए मर जाएं, पर राजा ने आकर उन्हें जिला देना था और उन्होंने अनन्तकाल तक उसके साथ रहने के लिए जाना था!

पूर्वाभास फीका पड़ा

द्वितीय आगमन पर बाइबल की अन्तिम आयत उन्नीस सौ से अधिक वर्ष पहले लिखी गई थी। सदियां बीत गई हैं और राजा अभी तक नहीं आया है। हम सांसारिक सोच वाले बन गए हैं, हमारी आंखें स्वर्ग की ओर नहीं लगी हैं। द्वितीय आगमन पर केवल एक शिक्षा का प्रचार हो रहा है और वह उन भावुक करने वाले लोगों का है, जो लोगों को अपनी बनाई हुई कहानियों के साथ उत्तेजित करते हुए, जिसे वे रैप्चर (ट्रिबुलेशन) सताव और पृथ्वी पर मसीह के राज्य की बातें कहते हैं। हम में से अधिकतर लोग इस संसार पर ध्यान लगाने वाले हो गए हैं; हमने इसी जीवन के साथ समझौता कर लिया है। राजा के वापस आने की सच्चाई के हमारे मनों में धूमिल हो जाने के कारण, हम पर इसका असर वैसा नहीं रहा जैसा आरम्भिक सदियों की कलीसिया में मसीही लोगों पर था:

- हम इसके द्वारा *बदले* नहीं हैं। अपने आस-पास के गैर मसीही लोगों की तरह, हमारे विचार *इसी* जीवन की बातों से भरे पड़े हैं।
- हमें इससे *चुनौती* नहीं मिली है। बहुत से लोग *हर* समय तैयार रहने की आवश्यकता को भूल बैठे हैं।
- सांसारिक बातों पर हमारे ध्यान लगाने के कारण, हम में *दृढ़ीकरण* अर्थात वह सामर्थ नहीं है कि जो इस सच्चाई से आ सकती है। हम जीवन की सांसारिक बातों में उलझ गए हैं।

- हम में वह *सांत्वना* नहीं है, जो आरम्भिक मसीही लोगों ने इस विश्वास से पाई थी कि ''राजा आ रहा है!'' हमें इस सांत्वना की *आवश्यकता* है। जब हम पीड़ित होते हैं, जब लगता है कि यह संसार युद्ध जीत रहा है। जब लगता है कि बुराई की जीत हो रही है, जब कलीसियाएं और कलीसिया के सदस्य तक हमें निराश करते हैं, तो हमें अहसास है कि ''राजा आ रहा है! अन्त में सब ठीक हो जाएगा!'' कितनी सांत्वना मिलती है।

किसी ने कहा है कि नये नियम की मसीहियत की बहाली का काम तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक हम प्रभु के लौटने के सम्बन्ध में नये नियम के मसीही लोगों की उत्तेजना को बहाल नहीं करते। हमें क्या करना चाहिए? हम द्वितीय आगमन पर और शिक्षा तथा प्रचार का कार्य कर सकते हैं। इस विषय पर कई अच्छे गीत हैं;[17] हम इन्हें गा सकते हैं। परन्तु मसीही लोगों के रूप में सबसे बड़ी आवश्यकता हम सब के लिए यह है कि इस सच्चाई को अपने मनों में इतनी गहराई से बसा लें कि चाहे जो भी हो जाए, हम जीवन को इसी परिप्रेक्ष्य से देखेंगे कि ''राजा आ रहा है! वह अगले पांच मिनटों में आ भी सकता है और नहीं भी, पर वह आ *सकता है।* राजा आ रहा है–और यही सब कुछ बदल देता है!''

सारांश

यदि राजा अभी आ जाए, तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? यदि अचानक हमें तुरहियों की आवाज़ सुनाई दे और इस इमारत की छत बीच में से फट जाए तो? यदि ऊपर नज़र मारने पर यीशु और उसके स्वर्गदूतों की महिमा दिखाई दे? यदि यहां और इस सभा के लोग हवा में उठने लगें? (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17।) क्या आप उसे वापस आते देखकर रोमांचित हो जाएंगे या भयभीत होंगे? क्या आप यूहन्ना के साथ सच्चे मन से कह सकते हैं कि ''आमीन। हे प्रभु यीशु आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:20ख)? राजा आ रहा है! आप विश्वास कर सकते हैं कि वह आ रहा है! यदि आप उसकी वापसी के लिए तैयार नहीं, तो मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही तैयार हो जाएं।[18]

नोट्स

द्वितीय आगमन पर मैं पुलपिट में पहली बार आने के समय से प्रचार कर रहा हूं। मैं इस महान विषय पर अपने से पहले के सभी वक्ताओं तथा लेखकों का ऋणी हूं। ''राजा आ रहा है!'' प्रवचन के लिए कई स्रोतों का इस्तेमाल किया गया परन्तु यह शीर्षक तथा इसका सामान्य ढंग *अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी* (1980), 103–15 में लैंडन बी. सॉन्डर्स के लैक्चर से लिया गया है।

हम द्वितीय आगमन पर उतना प्रचार करें या न, जितना हमें करना चाहिए, पर इस विषय पर भजनों की कई किताबों में गीत हैं। सॉन्ग लीडर से इस विषय पर गीत चुनने के लिए कहा जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]यह बाइबल के आम इस्तेमाल किए जाने वाले विभाजन ''मसीह आ रहा है''; ''मसीह यहां है''; ''मसीह फिर आ रहा है'' से लिया गया है। [2]विलियम एस. बेनोव्सकी, *सरमन ऑफ़ विलियम एस. बेनोव्सकी,* ग्रेट प्रीचर्स ऑफ़ टुडे सीरीज, अंक 11, सं. जे. डी. थॉमस (अबिलेन, टैक्सस: बिबलिकल रिसर्च प्रैस, 1965), 211. मसीह से सम्बन्धित पुराने नियम की भविष्यवाणियों की सही-सही संख्या का अनुमान अलग-अलग लेखकों द्वारा अलग-अलग लगाया जाता है। सही-सही संख्या का महत्व नहीं है। [3]भजन संहिता 2 एक ''शाही भजन'' है। जिसकी प्रासंगिकता इस्राएल के सांसारिक राजाओं के लिए थी, परन्तु अधिकतर यहूदी इस बात को समझते थे कि यह भजन तब तक पूरी तरह से पूरा नहीं होगा, जब तक मसीह नहीं आ जाता। नये नियम के वक्ताओं और लेखकों ने इस भजन के कुछ भागों को यीशु पर लागू किया (प्रेरितों 13:33; इब्रानियों 1:5; 5:5; प्रकाशितवाक्य 12:5)। [4]उदाहरण के लिए, याजकों का उनकी नियुक्ति के भाग के रूप में तेल से अभिषेक किया जाता था और भविष्यवक्ताओं का भी कभी-कभी तेल के साथ अभिषेक किया जाता था। [5]लैंडन बी. सॉन्डर्स, ''द किंग इज़ कमिंग!'' *अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी लैक्चर्स* (1980), 104. [6]परमेश्वर के ढंग हमारे ढंग नहीं हैं (यशायाह 55:8, 9)। [7]इससे सम्बन्धित कई आयतें दी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, देखें मत्ती 16:27; 26:64. [8]बेनोव्सकी, 211. [9]इस आयत का इस्तेमाल प्रीमिलेनियलिस्टों द्वारा ''रैप्चर'' के नाम से प्रसिद्ध मनुष्यों की शिक्षा देने के लिए किया जाता है। वे यह कहते हुए कि धर्मी लोग अधर्मियों से ''पहले'' जी उठेंगे, जो (उनकी शिक्षा के अनुसार) उसके बाद सात वर्ष तक जिलाए नहीं जाएंगे, ''पहले'' शब्द पर ज़ोर देते हैं। इस आयत में ''पहले'' शब्द का इस्तेमाल इस प्रकार नहीं है। ''पहले'' शब्द से मिलने वाला अन्तर धर्मियों और अधर्मियों के बीच का नहीं, बल्कि मरे हुओं और जीवित लोगों का है। वचन कहता है कि जो ''मसीह में मरे हैं'' वे ''पहले'' जी उठेंगे, और *तब* जो ''मसीह में'' जीवित हैं, बादलों में प्रभु से मिलने के लिए जिलाए जाएंगे। बाइबल सिखाती है कि *सभी* मृतक चाहे वे भले हों या बुरे एक ही समय में जिलाए जाएंगे (यूहन्ना 5:28, 29)। [10]कुछ लोग यह विश्वास नहीं करते कि यह आयत द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में है, बल्कि कलीसिया के आरम्भिक दिनों के दौरान दुष्ट लोगों पर आने वाला अस्थाई न्याय है। परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अन्त में, विचाराधीन विषय द्वितीय आगमन का लगता है।

[11]बेनोव्सकी, 213-14. [12]वही, 213. [13]कई लोगों ने मसीह की वापसी का समय निर्धारित करने के प्रयास किए हैं। जब वह उनकी भविष्यवाणी के अनुसार नहीं आया, तो कुछ लोगों ने अपने अनुमान को रद्द करने का प्रयास किया है कि ''वह आया तो था, परन्तु अदृश्य रूप में, कुछ चुने हुए लोगों के लिए, और उसने निर्णय लिया कि समय अभी सही नहीं है सो बाद में दोबारा फिर आएगा।'' बाइबल सिखाती है कि जब मसीह आएगा, तो ''*हर एक आंख* उसे देखेगी'' (प्रकाशितवाक्य 1:7)। [14]उसके आने का समय निर्धारित करने का प्रयास करने वाले लोग स्पष्टतया नये नियम की शिक्षा पर कम ध्यान देते हैं कि राजा ''रात में चोर के आने की तरह'' आ रहा है (1 थिस्सलुनीकियों 5:2; देखें मत्ती 24:42-44; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:4; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3; 16:15)। [15]आपको यहां द्वितीय आगमन की कुछ सच्चाइयों पर ज़ोर देने के लिए रुक जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यह ध्यान दिलाएं कि वह अपना राज्य स्थापित करने के लिए *नहीं* आ रहा है, जैसा कि प्रीमिलेनियलिस्ट सिखाते हैं। राज्य/कलीसिया तो पहले ही स्थापित हो चुका है। [16]बेनोव्सकी, 214 में उद्धृत। जीन बैपटिस्टे मैसिलोन को ''बिशप ऑफ़ क्लेरमोंट'' कहा जाता था और उन्होंने फ्रांस के लुइस चतुर्थ के लिए दरबारी प्रचारक के रूप में सेवा की। [17]यदि इस विषय वाले गीत आपके संदेश से पहले इस्तेमाल किए गए हों तो आप संक्षेप में उनके शब्दों को दोहरा सकते हैं। [18]जब आप इस प्रवचन में से सुनाएं, तो आपको चाहिए कि लोगों को बता दें कि उन्हें क्या करना है: उनकी अपनी भलाई के बजाय यीशु के बलिदान में भरोसा करना और प्रेम और आज्ञाकारिता में उसकी ओर लौटना (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38)। अविश्वासी मसीहियों को समय रहते वापस आ जाना चाहिए (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।